विद्या,- भवन, बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

नीतू कुमारी, विषय-हिंदी, वर्ग-पंचम

पाठ -3 पुनरावृति

दिनांक-25--01-2022 एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

सुप्रभात बच्चों,

दिए, गए कविता अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें तथा याद करें।

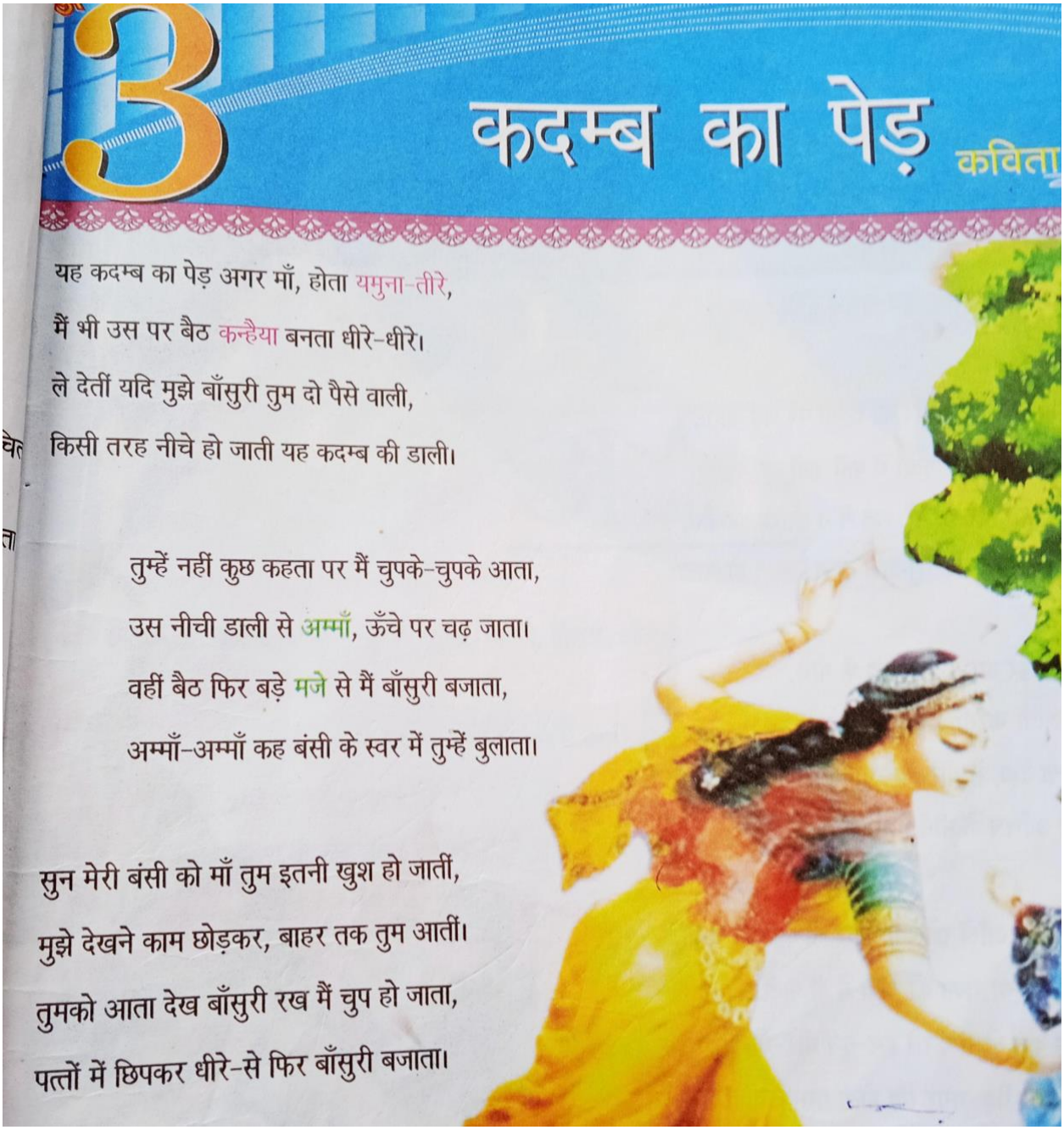

3 कदम्ब का पेड़

कविता

यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना-तीरे,
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।
ले देतीं यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसे वाली,
किसी तरह नीचे हो जाती यह कदम्ब की डाली।

तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्माँ, ऊँचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं बाँसुरी बजाता,
अम्माँ-अम्माँ कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

सुन मेरी बंसी को माँ तुम इतनी खुश हो जातीं,
मुझे देखने काम छोड़कर, बाहर तक तुम आतीं।
तुमको आता देख बाँसुरी रख मैं चुप हो जाता,
पत्तों में छिपकर धीरे-से फिर बाँसुरी बजाता।